एक अप्रत्याशित घटना थी। नेपोलियन तृतीय ने सार्डिनिया से पूछे बिना ग्यारह जुलाई को विलाफ्रांका में आस्ट्रिया के सम्राट से मिलकर युद्ध विराम की शर्त तय कर ली। आस्ट्रिया ने लोम्बार्डी का प्रान्त फ्रांस को और फ्रांस ने सार्डिनिया को हस्तान्तरित कर दिया। वेनेशिया का प्रांत आस्ट्रिया के अधिकार में बना रहा।

नेपोलियन द्वारा युद्ध को अचानक बन्द करने के कई कारण थे। नेपोलियन को यह अनुभव हुआ कि यदि आस्ट्रिया को पूर्णतः इटली से निकाला गया, तो पीडमान्ट के नेतृत्व में इटली का संघ बन जायेगा। जो फ्रांस के लिए अहितकर सिद्ध होगा। पोप की सत्ता कमजोर होने के कारण कैथोलिक लोगों में उसकी लोकप्रियता घट सकती थी। इसके फ्रांस को प्रशा के आक्रमण का भय अधिक था।

विलाफ्रांका की संधि का समाचार पाकर इटलीवासियों और विशेषकर काबूर पर वज्रपात हुआ। विजय के अंतिम क्षण में अपने मित्र सार्डिनिया से पूछे बिना युद्ध रोक देना, विश्वासघात था। काबूर अकेले युद्ध जारी रखना चाहा, पर जब इमेनुअल तैयार नहीं हुआ तो काबूर ने इस्तीफा दे दिया। राजा ने काबूर की बात न मानकर अपनी व्यवहारिक बुद्धि का परिचय दिया क्योंकि युद्ध विराम की शर्तें न मानने पर लोम्बार्डी फिर हाथ से निकल सकता था। इसलिए विक्टर इमेनुअल ने ज्युरिख की संधि के द्वारा विलाफ्रांका की संधि को मान्यता दे दी। अब लोम्बार्डी पर पीडमान्ट का निर्विवाद अधिकार स्थापित हो गया और इटली के एकीकरण का प्रथम चरण समाप्त हो गया।

आस्ट्रिया और फ्रांस के युद्धकाल में ही मध्य इटली के पारमा, मोडेना, टसकनी, बोलाग्ना, रोमाग्ना के शासकों तथा पोप के प्रतिनिधियों को जनता ने निकाल दिया। यहाँ जनता पीडमान्ट में विलय के लिए आतुर थी। इटली ने प्रस्ताव किया कि इन रियासतों को अपने भाग्य का स्वयं निर्णय करने दिया जाए। नेपोलियन फिर तैयार हो गया था कि यदि फ्रांस को नीस और सेवाय मिल जाते हैं तो इन रियासतों को पीडमान्ट में मिलने पर उसे कोई एतराज नहीं होगा। मार्च 1860 में मध्यवर्ती राज्यों में एकीकरण के सम्बन्ध में जनमत संग्रह किया गया। मध्य इटली के इन राज्यों ने प्रायः सर्वसम्मति से पीडमान्ट में और नीस तथा सेवॉय ने फ्रांस में विलय स्वीकार कर लिया।

काबूर के प्रयत्नों से इटली के उत्तरी और केन्द्रीय भाग का एकीकरण हो गया किन्तु राष्ट्रीय एकता का स्वप्न भी पूरा हो सकता था जब कि वेनेशिया, रोम, नेपल्स और सिसली के राज्य भी स्वतंत्र इटली के राज्य में मिलाए जाएँ।

इस अधूरे काम को पूरा करने का श्रेय उत्कृष्ट देशभक्त गैरीबाल्डी को मिला। सिसली में बहुत दिनों से ~~फ्रांसिसी~~ फ्रांसीस द्वितीय के विरुद्ध विद्रोह हो रहा था। 1860 में सिसली में फिर विद्रोह हुआ और विद्रोहियों ने गैरीबाल्डी से सहायता माँगी। गैरीबाल्डी ने इस शर्त पर सहायता देने को स्वीकार कर लिया कि विद्रोह विक्टर इमेनुअल एवं सार्डिनिया के पक्ष में हो रहे गैरीबाल्डी ने अपने प्रसिद्ध "एक हजार" स्वयं सेवकों, जो लाल कुर्तीवाले कहलाते थे, के साथ सिसली की ओर ~~प्रस्थान~~ प्रयान किया। जन

मैसिनांक किले के अलावा सारे सिसली पर उसका कब्जा हो गया। उसने तुरन्त अपने को इमैनुअल का प्रतिनिधि घोषित कर सिसली का पीडमान्ट में विलय कर दिया। उसने नेपुल्स को भी पराजित कर दिया।

काबूर अपना काम एक-दूसरे देशभक्त के हाथों पूरा होते देख संतुष्ट था लेकिन जब गैरीबाल्डी ने रोम पर हमले की योजना बनाई तो वह चौकन्ना हो गया। रोम में नेपोलियन तृतीय की सेना पोप की रक्षा के लिए मौजूद थी। काबूर को भय था कि कहीं, नेपोलियन हस्तक्षेप न कर दे। इसके अलावा उसे यह भी संदेह था कि कहीं गैरीबाल्डी के अनुयायी गणतंत्र के समर्थक हो जायें। इसीलिए इसके पहले कि उत्साह में गैरीबाल्डी कुछ कर बैठे उसने स्वयं दक्षिण की ओर सेना भेज दी। पोप की रियासत को जीतती यह सेना गैरीबाल्डी की सेना से जा मिली। गैयिना का किला भी तब तक फतह हो चुका था। विजित क्षेत्रों में हर जगह जनमत संग्रह के बाद भारी बहुमत से लोगों ने पीडमान्ट में विलय का निर्णय किया।

अब वेनेशिया और रोम को छोड़कर सारे इटली का एकीकरण पूरा हो गया। 1861 में इमैनुअल को इटली का राजा घोषित किया गया। कुछ ही दिनों के बाद काबूर की मृत्यु हो गई। एक राष्ट्र के रूप में इटली काबूर की देन है।

अब वेनेशिया और रोम संयुक्त इटली के राज्य के बाहर रह गए थे। इन दोनों राज्यों का विलय जर्मन एकीकरण के क्रम में हुआ। प्रशा का चाँसलर बिस्मार्क भी काबूर की तरह आस्ट्रिया को जर्मनी का मुख्य दुश्मन समझता था। उसने आस्ट्रिया को परास्त करने की योजना में इटली को भी शामिल कर लिया। एमैनुअल ने दूरदर्शिता दिखाई और आस्ट्रिया पर जब उत्तर से प्रशा ने हमला किया तो दक्षिण से उसकी सेना ने वेनिशिया पर हमला कर दिया। फलतः आस्ट्रिया की सेनाएँ बँट गईं और 1866 में सेडोवा में आस्ट्रिया की भारी पराजय हुई। जब संधि हुई तो अन्य शर्तों के साथ यह भी शामिल किया गया कि वेनेशिया इटली को वापस दिया जाए।

1870 में जब प्रशा ने फ्रांस पर आक्रमण किया तो फ्रांस ने रोम से अपनी सैनिक टुकड़ी वापस बुलाई। एमैनुअल ने फौरन रोम में प्रवेश किया। पोप के सैनिकों ने थोड़ा विरोध किया लेकिन अंत में रोम संपूर्ण इटली का राजधानी घोषित हो गया।

इस प्रकार एक दीर्घकालीन संघर्ष के बाद मैजिनी के नैतिक बल, गैरीबाल्डी की तलवार, काबूर की कूटनीति, विक्टर एमैनुअल की समझदारी और व्यवहारिक बुद्धि तथा असंख्य देशभक्तों के बलिदान तथा विदेशियों की सहायता से इटली के एकीकरण का महायज्ञ पूरा हुआ।

The End

Bobby